101 अनमोल वचन

1. माता-पिता की सेवा करने से पृथ्वी और आकाश के सभी देवी-देवता प्रसन्न हो जाते है।
2. माँ-बाप और सास-ससुर तन से सेवा नहीं करवाते तो मन से सेवा करो। मन की सेवा तन की सेवा से बड़ी होती है। मन में उनके प्रति प्यार रखो, वे एक दिन पिघल जाएंगे।
3. जो अपने माता-पिता से प्यार नहीं कर सकता वह सतगुरू को प्यार नहीं कर सकता।
4. जिस घर में औरत का सम्मान और प्यार नहीं, वह घर घर नहीं, श्मशान है।
5. संत-सतगुरू लड़कियों से अपने पैरो को हाथ नहीं लगवाते क्योंकि बहन या बेटी से पैरो को हाथ लगवाना पाप होता है।
6. लड़कियों को केवल अपने पति के पैरों को हाथ लगाना चाहिए। किसी दूसरे के पैर छूने से उसका पतिव्रता धर्म खण्डित हो जाता है।
7. यदि बुढ़ापे का सुख चाहिए और औलाद लायक बनानी हो तो दो वक्त परमात्मा का भजन करो।
8. पहले अपने घरों का व्यवहार ठीक करो। यह राधास्वामी मत की पहली सीढ़ी और नींव है।
9. सतगुरू शिष्य की मां होती है। कोई भी मां अपने बच्चे के हाथ में हथियार नहीं देती। अत: सुख-दु:ख उनकी मौज समझो।
10. जो साधन अभ्यास करता है वह सतगुरू से कुछ नहीं मांगता। पतिव्रता न तो बेटा मांगती है, न ध न, वह तो केवल अपने पति की कुशलता मांगती है जानती है कि इसमें सब कुछ आ जाता है।
11. परमार्थ से स्वार्थ और परोपकार दोनों स्वयं ही पुरे हो जाते है।
12. यदि गुरू के पास जाने से तुम्हारा लोक-परलोक दोनों नहीं सुधरते तो ऐसे गुरू को छोड़ देना चाहिए।
13. सुख-दु:ख मन की अवस्थाएं हैं। सुख मानने से सुख और दु:ख मानने से दु:ख होता है।
14. तन और मन की सेवा करने से अंहकार समाप्त होता है धन की सेवा करने से आसवित कम होती है। आसक्ति आवागमन की जननी है।
15. सतगुरू सुली का दर्द सूल में टाल देता है?
16. बंदूक की गोली मिस हो सकती है, सन्त की वाणी नहीं चूक सकती।
17. सन्तों के पास राम-नाम का पहरा होता हे, बंदूकों का नहीं।
18. सत्संगी वहं है जो दूसरों की निंदा और ईर्ष्या नहीं करता। दूसरों की निंदा करने से उनके कर्मों का भार अपने सिर आ जाता है।
19. किसी का दिल मत दु:खाओं ''मन्दिर तोड़ों मस्जिद तोड़ो ये तो यार मुजाका है पर दिल किसी का मत तोड़ों ये घर खास खुदा का है।''
20. हमेशा भूखें और गरीब की मदद करो। ''कबीर कहै कमाल से दो बातें कर ले, इक साहिब की बन्दगी इक भूखे को कुछ दे।''
21. मनुष्य के खोटे कर्म 'भूत' व पुष्य कर्म 'देवता' बनकर प्रकट हो जाते है।

22. संत सतगुरू को संगत का पैसा और चढ़ावा अपने शरीर के लिए प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे यान-भजन में विघ्न पड़ता है ओर मन चंचल होता है।
23. जो साध गृहस्थ्यिों का अन्न खाता है उसे दो घंटे अधिक अभ्यास में बैठना चाहिए।
24. जो सतगुरू दो रोटी नहीं दे सकता, वह मुक्ति कैसे दे सकता है। सतगुरू जो शहनशाहों के शहनशाह होते है, वे तो खाली को भी भर देते है।
25. यद्यपि संत कर्मा के कर्ता होते हैं फिर भी वे करामातें नहीं दिखाते क्योंकि वे सतपुरूष के नियम को मजबूत करने के लिए आते हैं।
26. स्वतः संत मणि पूरक से आते हैं, जहां बैठ जाते हैं, वहीं प्रेम और शाति की धारा बहने लगती है।
27. करणी का गुरू जहां बैठता है वहीं गद्दियां बन जाती है। गद्दी का गुरू उन गद्दियों और डेरों का पहरा देने आता है।
28. तुम पत्थरों से बनाई गई मूर्तियों को पूजते हो लेकिन उस खुदा के बनाए हुए मन्दिर (मनुष्य) का अपमान करते हो जहां वे स्वयं वास करते है।
29. अगर तुम प्रभु को समर्पित हो जाओगे तो वो भी तुम्हें समर्पित हो जाएगा, तुम कुछ बचे रहे तो वो भी बचा रहेगा।
    ''तू सरके डीग एक, मैं सरकू डीग आठ' तू जो करड़ा होय तो, मैं हूं करड़ा काठ''
30. जहां संतों के चरण टिक जाते हैं उस भूमि का भार उतर जाता है।
    '' सन्त चरण गंगा की धारा, जहां टिकै हो निस्तारा''
31. जब जीव सतगुरू के शरणागत हो जाता है तो वह पाप और पुण्य दोनों से परे निर्लेप अवस्था में चला जाता है। उसके सभी बन्धन कट जाते हैं।
32. सन्त सतगुरू से ग्रन्थ बनते है, ग्रन्थों से सन्त नहीं।
33. सतगुरू का प्रसादा उनके वचन होते हैं। वचन का पालन करने से असली प्रसाद और पंचामृत की प्राप्ति होती है।
34. सतगुरू बंधन में होता हुआ निरबंधी होता है और निरबंधी होता हुआ बंधन में रहता है।
35. सन्त सतगुरू कर्म की सेवा की रेख पर मेख मार देते है। सारे कर्म काट देते है। मगर किसके ? जिनका उन पर अटल विश्वास होता है।
36. ब्राह्मण वही होता जो ब्रह्म में लीन होता है, वह दाने देता है, लेता नहीं। उसके अन्दर देता हे, लेता नहीं। उसके अन्दर शब्द रूपी कामधेनू गाय प्रकट हो जाती है, जो उसकी सभी इच्छाओं की पूर्ति कर देती है।
37. गुरूमुख और पतिव्रता नारी जो चाहे कर सकते हैं।
38. जो सतगुरू में समा जाता है उसे सब जगह गुरू ही गुरू दिखाई देता है। उसका सारा ज्ञान पूर्ण हो जाता है।
39. स्मरण, ध्यान और भजन सुरत-शब्द योग के तीन सोपान हैं। नाम का जाप 'स्मरण', प्रकाश का देखना 'ध्यान और शब्द का सुनना 'भजन' कहलाता है।

40. कपड़े रगंने से मुक्ति नहीं होती। जटा या दाढ़ी बढ़ाने से मुक्ति नहीं होती, मुक्ति होती है शुद्ध विचारो से, शुद्ध कमाई का अन्न खाने से।
41. गन्दगी की मक्खी नहीं शहद की मक्खी बनो।
42. आत्मा की सुन्दरता उसकी पवित्रता में है।
43. जब कोई कष्ट आए तो दान और ध्यान करने बोल देने चाहिए।
44. साधु की अपनी मर्यादा में रहना चाहिए। मर्यादा टूटने पर साधु कंगाल हो जाता है।
45. बिना दया के सिद्ध सी कसाई के समान होता है।
46. दो ही चीजें साधु की दुश्मन होती है नशा और विषय।
47. जो शराब नहीं पीता वह शेर है, और जिसने पीकर छोड़ दी वह शेरों का शेर है।
48. मनुष्य ख्याल मात्र से बुरा या अच्छा बन जाता है। '' जैसा ख्याल वैसा हाल''
49. तुम पहले आर्य बनों, अपने हृदय को पवि? करो। एक आर्य ही संतमत की शिक्षा को समझ सकता है।
50. जो मनुष्य ऊपर से खाता है और नीचे से झरता है अर्थात ब्रह्मचर्य बर्बाद करता है, वह प्रकाश का मुंह नहीं देख सकता।
51. औलाद के लिए औलाद पैदा करो, बाकी समय में ब्रह्मचर्य का पालन करो, तभी तुम अमृत सरोवर और त्रिवेणी में स्नान कर सकते हो।
52. बुढ़ापे में भी ब्रह्मचर्य का पालन आदमी को तैरा देता है। केवल तन से ही नहीं, बल्कि मन से ब्रह्मसर्च का पालन होना चाहिए।
53. मुसलमान नमाज के पक्के होते है, सिक्ख सेवा के और हिन्दू दयावान होते है। संत में ये सारे गुण विद्यमान होते है।
54. बच्चा यदि नालायक होता है तो उसके लिए उसके मां-बाप के विचार जिम्मेदार होते हैं। इसलिए विचारों और सदाचार मजबूत रखो।
55. हर वक्त अपने विचार ऊँचे रखो, ऊँचे विचार रहेंगे तो तारामण्डल तुम्हारे अन्दर है। अगर ज्यादा विषय में पड़ गए तो तारामण्डल और सूर्यमण्डल को नहीं देख सकते।
56. विचार पवित्र रखो और हमेशा सतगुरू की मौज में रहो।
57. रहणी के घर करणी पानी भरती है। ''रहणी के मैदान में, रहणी आवै जाए'' कहणी पीसे पीसना, रहणी बैठी खाए।''
58. राम और लक्ष्मण की रहनी मजूबत थी। वो अयोध्या से सदाचार लेकर निकले थे रावण जो चारो वेदों का ज्ञाता था उसे तहस-नहस करके घर लौटे।
59. जिसकी रहणी मजबूत है, सदाचार ठीक है। उसके तारामण्डल सूर्यमण्डल और प्रकाश नहीं खुले तो मैं उसका दास हूं जिन्दगी भर।
60. जिसने नाम ले लिया उसके सभी कर्मकाण्ड पूरे हो जाते हैं। '' नाम लिया जिन सब किया योग, यज्ञ, आचार, जप, जप तीर्थ परसराम सभी नाम की लार।''

61. जो पूर्ण संत सतगुरू होता है, वह सच्ची कह देता है और ग्रन्थों का हवाला देकर समझा देता है पर वह किसी चीज में फंसने नहीं देता।
62. हर व्यक्ति को 24 घंटे में से ढाई घंटे भजन करना चाहिए। यही होता है - अपनी कमाई से दसवां हिस्सा गुरू को अर्पण करने' का सच्चा अर्थ।
63. जब विरह वैराग की आंधी है तब काम, क्रोध लोभ, मोह और अहंकार सब के सब उस आंधी में खो जाते हैं। अपना अस्तित्व भूल जाते हैं।
64. कितने ही शास्त्र पढ़ो, कितनी ही नाम की कमाई करे यदि सतगुरू से प्रेम नहीं तो त्रिकुटी से आगे नहीं जा सकते।
65. मालिक के घर में केवल भक्ति प्यारी है, विषयों से पूरा वैराग केवल भक्ति द्वारा ही संभव है।
66. चाहे कोई मनुष्य मालिक की भक्ति पाताल में बैठ कर करले, एक दिन मालिक अवश्य प्रकट हो जाएगा, लेकिन भक्ति सच्चाई से होनी चाहिए।
67. प्रेमी भक्त कभी बेसहारा नहीं होते क्योंकि उनका प्रीतम सदा उनके अंग-संग रहता है।
68. चाहे आदमी किसी भी जाती का हो यदि वह भक्ति करेगा तो चमक उठेगा। '' जात-पात पूछे ना कोई, हर को भेजे सो हर का होई''।
69. सतगुरू से प्यार होगा तभी उसकी रेडिएसन हमारे अन्दर आएगी और उनके गुरू भी हमारे अन्दर आ जाएंगे।
70. गुरू की पूर्ण भक्ति शब्दों को पार करके दसवें शब्द में जाने का नाम है। उन सभी शब्दों का पूरा परिचित होना गुरू की पूर्ण भक्ति है।
71. सतगुरू को कौन सी भेंट चाहिए ? जब तुम अन्तर में नूरी गुरू के दर्शन कर लेते हो और उसे शब्द को सुन लेते हो तो तुम विरोध व विकारों को भूले जाते हो, यही सतगुरू की भेंट है।
72. राधा 'आत्मा' और स्वामी 'परमात्मा' का नाम हे, किसी सत्री का पुरूष का नहीं।
73. जब तक मन इन्द्रियों में फंसा रहता है, वह जिस्मानी कहलाता है। जामण-मरण में फंसा रहता है।
74. जब मन अभ्यास द्वारा नुर (प्रकाश) के चला जाता है तो वह रूहानी बन जाता है और सुरत का मद्दगार कहलाता है।
75. पूजा-पाठ, जप-तप आदि कर्मकाण्ड अहंकार को जन्म देते हैं, जबकि सुरत 'शब्द अभ्यास सच्ची शान्ति देता है।
76. जब अन्तर का अनहद नाद खुल जाता है तो अढ़सड तीर्थ, सभी देवता सभा शास्त्र पीछे रह जाते है।
77. जिसने नाम की कमाई कर ली चाहे वो कितना ही भोला हो, कितना ही बावला हो, मालिक उसके सारे काम पूरे कर देता है।
78. ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीनों मियादी (सीमित) हैं। इनके पास मुक्ति नहीं हैं।

79. सतगुरू की खोज ही सबसे दुर्लभ रत्न हैं। जब पूर्ण सतगुरू मिल जाता है तो काम-कर्म का लेखा निमड़ जाता हैं।
80. सतगुरू 'प्रकाश और शब्द-नहीं खोलते। वरे सदाचार मजबूत करते हैं जिससे शब्द व प्रकाश स्वत: ही खुल जाते है।
81. जो सतगुरू कंवल भेद नहीं बताता वा तुम्हें नाम नहीं, मन्त्र देता है।
82. जब हम नौ द्वार खाली करके अन्तर के प्रकाश को देख लेते हैं सुरत-बार-बार उसी प्रकाश में जाने के लिए तड़फ उठती है।
83. जो जितना अभ्यास करेगा, अन्तर का प्रकाश देखेगा, उतनी ही उसकी बारिक बातों को समझने की शक्ति बढ़ती जाएगी।
84. देह का नाम सतगुरू नहीं है। शील, संतोष, ज्ञान, समझ और विवेक का नाम सतगुरू है।
85. सतगुरू देहधारी शब्द होता है वह हमेशा शब्द में लीन रहता है और शब्द की ही कमाई करता है।
86. अनहद कूप (शब्द) तुम्हारे अन्दर भरा है, इसे स्वासम् स्वांसा पीना है और जिसको ये कूप मिल गया, शब्द खुल गया वह जामण-मरण में नहीं आता।
87. सारी सृष्टि का कर्ता शब्द है, वही सतगुरू है वो न लिखने में आता न पढ़ने में। उसका कोई फोटो नहीं बनता।
88. ओह्म, सोह्म, राधास्वामी सभी नाम धुनात्मक हैं। जब तक धुन नहीं पकड़ी जाती तब तक नामी नहीं मिलता।
89. सतलोक से नीचे के नाम काल और माया के नाम हैं। ये ऊपर जाने नहीं देते। राधास्वामी नाम सतलोक से ऊपर का नाम है जो मुक्ति में ले जाता है।
90. 'राधास्वामी दयाल' कुल रचना का मालिक है। वह परम्दयाल परम् स्नेही है। वही सच्चा मीत है। वह कण-कण में बस्ता है। और कण-कण का स्वामी है।
91. स्थूल सतगुरू तुम्हारी मदद करता है। लेकिन सतगुरू का नूरी और कारण स्वरूप तुम्हारे अन्दर है सतगुरू कही बाहर नही तुम्हारे अन्दर मौजूद है।
92. सन्त को छ: घंटे मालिक का ध्यान करना चाहिए तथा वह जीवों का उद्धार कर सकता है।
93. मनुष्य के शरीर में 18 चक्र हैं। 6 चक्र स्थूल शरीर के, छ' चक्र ब्रह्माण्ड यानि सूक्ष्म शरीर के और 6 चक्र सच्चखण्ड यानि कारण और महाकारण शरीर के हैं।
94. राधास्वामी धुन 18वीं मंजिल की धुन है, जिसमें से सतलोक और त्रिलोकी के सभी धुन और शब्द प्रकट हुए है।
95. सूक्ष्म की पहली मंजिल पार करते ही काम अंग ढीला पढ़ जाता है। खुली आंखों के ध्यान करने से मनुष्य कामी और क्रोधी बन जाता है।
96. जो सतगुरू की रचना 18 मंजिलों, 10 प्रकार के शब्द, 25 प्रकृति 52 अक्षर और 72 नालों का भेद खोलता है वही पूर्ण संत सतगुरू है।
97. ''सतगुरू-प्रेम और स्मरण'' ऐसे हथियार हैं जो ध्यान की किसी भी रूकावट को पल में धाराशाही कर देते है।

98. यदि नाम लेने से शान्ति नहीं मिलती तो उस नाम को छोड़ देना चाहिए, लेकिन नाम लेकर उसकी कमाई करनी चाहिए।

99. रास्ते में कई अंधकार के मण्डल आते हैं जिनसे शब्द–स्वरूपी सतगुरू ही निकाल सकता है।

100. संत का शरीर प्रकाश का झरना बन जाता है, पलक झपकते ही नूर ही नूर दिखाई देता है, पलक झपकने से देरी हे, सुभान कुदरत तेरी है।

101. इस तरह सुरत सतगुरू–प्रेम में लिपटी हुई, विरह की तलवार और स्मरण की ढ़ाल बनाकर एक दिन अपने प्रीतम से जा मिलती है।

और 101 वचनों से अलग लिखे हुए थे।

जो सच्चा गुरूमुख है वह सतगुरू से कछ नहीं मांगता। वह सतगुरू की रजा में राजी रहता है।

संतो के पास राम नाम का पहरा होता है, बंदूको का नही।

मनुष्य के खोटे कर्म 'भूत' व पूण्य कर्म 'देवता' बनकर प्रकट हो जाते है।

सतगुरू शहंशाहों के शहनशाह होते है जो खाली को भी भर देते है।

जो स्वयं के अन्दर सूर्य व चन्द्रमा के दर्शन करता है वही सुर्यवंशी और चन्द्रवंशी है।

तुम दुनिया के कांटे नहीं बुहार सकते। सदाचार की मजबूत जूती पहन लो।

आकारो की सारी सृष्टी अंहकार की अभिव्यक्ति है। आकार का पार मुक्ति का हार है।

प्रकाश व अनहद नाद सारी सृष्टि की जान है।

सतगुरू का नूरी और कारण स्वरूप मनुष्य के अन्दर है वह बाहर भटकने से प्राप्त नहीं होता।

सच्चा अध्यात्म धन और आश्रमों का मोहताज नहीं होता।

हम पत्थरों से बनाई गई मूर्तियों की पूजा करते है लेकिन ईश्वर के बनाए हुए जीवित मन्दिर (मनुष्य) का अपमान करते है।

माता–पिता की सेवा करने से पृथ्वी और आकाश के सभी देवी–देवता प्रसन्न हो जाते है।

संत सतगुरू से ग्रन्थ बनते है ग्रन्थों संत नहीं।

ब्राह्मण वहीं है तो ब्रह्म मे लीन होता है वह दान देता है, लेता नहीं।

जो सतगुरू में समा जाता है उसे सब जगह गुरू ही गुरू दिखाई देता है।